गाँधी की पत्रकारिता और आज की पत्रकारिता

- नन्दिता मिश्रा
विद्यार्थी,
बी.ए.जनसंचार,
सेमेस्टर-3

भारत का इतिहास स्वतंत्रता संग्राम और पत्रकारिता से जुड़ा हुआ है। स्वतंत्रता संग्राम में योगदान देते हुए पत्रकारों ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई। उस समय की पत्रकारिता में गाँधी जी की पत्रकारिता भी अहम थी। महात्मा गाँधी ने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से देश की स्वतंत्रता के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। गाँधी जी की पत्रकारिता और आज की पत्रकारिता में बहुत अंतर है। गाँधी जी एक साहसी पत्रकार थे, उन्होंने कभी दबाव में आकर कोई बात नही लिखी। आज पत्रकारिता ऐसे पड़ाव ज्यादा हैं, जहाँ पत्रकारों का झुकाव ऊँचे पद पर बैठे लोगों की ओर रहता है और उन्हीं की सुविधा के अनुसार वे प्रकाशन करते हैं।

गाँधी जी के लेखों में कमजोर वर्ग के प्रति चिन्ता दिखाई देती थी और आज की पत्रकारिता में राजनीतिक नेतृत्व की चिन्ता दिखाई देती है। गाँधी जी सत्य, अहिंसा और हिन्दू-मुस्लिम एकता पर ज्यादा लिखते थे, इन सब आदर्शों को वे अपने जीवन में अपनाते भी थे। पर आज की पत्रकारिता न आदर्ष लगभग ना के बराबर ही बच पाये हैं। आज पत्रकारिता में एकता की नहीं बंटवारे की बात ज्यादा होती है। खबरों को इतना बढ़ा-चढ़ाकर लिखा जाता है कि सत्यता उसमें कहीं गुम सी हो जाती है।

गाँधी जी का समाचार पत्र 'इंडियन ओपिनियन' तीस वर्षों तक बिना 'विज्ञापन' के प्रकाशित हुआ, उन्हें किसी प्रकार का लोभ नही था। आज पत्रकारिता के हालात ऐसे हैं कि बिना विज्ञापन के किसी समाचार पत्र का चल पाना नामुकिन हो गया है। पत्रकार जगत और उसमें बैठे लोग 'विज्ञापन और शुभ-लाभ' पर केन्द्रित होकर रह गए हैं। विज्ञापन भी इस प्रकार के हैं, जिनका सामाजिक कल्याण से कोई खास संबंध नहीं होता। अधिकांशतः केवल व्यापारिक हितों को ध्यान में रखते हुए ही विज्ञापन दिये जाते हैं।

गाँधी जी इस बात से बहुत प्रसन्न होते थे कि उनके द्वारा प्रकाशित 'नव जीवन' को पढ़ने वालों में किसानों और मजदूरों की संख्या सबसे ज्यादा होती है। उनके लेखों में देशवासियों के प्रति संदेश होता था। गाँधी जी ने लिखने के साथ ही किसानों और मजदूरों के उद्धार के लिए प्रयत्न भी किया करते थे। आज की पत्रकारिता में ये गुण नही हैं, आज के पत्रकार इन बातों पर ध्यान नहीं देते, क्योंकि उनका ध्यान तो सत्ताधारियों को लुभाने में ज्यादा होता है।

गाँधी जी की पत्रकारिता में देश की संस्कृति को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ बताईं हैं। वर्तमान में पत्रकारिता का वो दौर है जहां हमारी संस्कृति को दूर रखकर उसका हनन किया जा रहा है। महात्मा गाँधी ने समाज के विकास के लिए पत्रकारिता को चुना, वे जानते थे कि जनता को जागरुक करने के लिए और उनके विचारों को व्यक्त करने का सबसे अच्छा माध्यम पत्रकारिता है। लेकिन आज पत्रकारिता का उपयोग जागरुकता के लिए नही, बल्कि लोगों को भ्रमित करने के लिए किया जा रहा है।

गाँधी जी की पत्रकारिता में सामाजिक उत्थान के प्रति गंभीरता थी, लेकिन इस विषय को भी उन्होंने बहुत ही सरल भाषा में लिखा और अपने विचार स्पष्ट रूप से लोगों के सामने रखे। गाँधी जी की पत्रकारिता में निष्पक्षता

रहती थी, किसी भी बात को वे सनसनी के रूप में प्रस्तुत नहीं करते थे। आज तो लगभग हर खबर को एक नया रूप देकर दिखाया जाता है, खास तौर पर राजनीति से जुड़ी खबरों को। आज हमारे देश में पत्रकारिता का ऐसा दौर है जहां, पत्रकारों को किसी खास राजनीतिक विचारधारा के लिए पहचाना जा रहा है। समय के साथ ही यह स्पष्ट होता जा रहा है कि अब पत्रकारिता में निष्पक्षता नहीं है, हर मीडिया संस्थान साफ तौर पर किसी एक राजनीतिक पार्टी के साथ खड़ा दिखाई दे रहा है, उसका समर्थन कर रहा है।

गाँधी जी ने इस प्रकार से कभी राजनीति को खुद पर हावी नहीं होने दिया, न ही कभी पत्रकारिता के माध्यम से किसी व्यक्ति विशेष का पक्ष लिया। 'यंग इंडिया' के प्रकाशन का खास मकसद था युवाओं को प्रोत्साहित करना, इस समाचार पत्र में लिखे गाँधी जी के कथन देश के नवयुवकों को समर्पित थे। एक आक्रामक लेख लिखने के कारण गाँधी जी को जेल भी जाना पड़ा था, लेकिन जेल भी उनके लेखन कार्य को रोक नहीं सकी। जेल में रहते हुए उन्होंने 'हरिजन' का प्रकाशन शुरु किया, वे मानते थे कि हरिजनों को उनके अधिकार और सम्मान मिलना चाहिए।

एक बार ब्रिटिश सरकार ने गाँधी जी के समाचार पत्रों के प्रकाशन पर प्रतिबंध लगा दिया था, पर गाँधी जी ने ठान लिया था कि कोई भी ताकत उनके विचारों को व्यक्त करने से नही रोक सकती। उन्होंने उसी दौरान 'सत्याग्रह' नामक साप्ताहिक निकाला जो पंजीकृत (रजिस्टर्ड) नहीं था। यह बात दर्शाती है कि गाँधी जी को अंग्रेजी शासन का डर नहीं था । आज के अधिकांष पत्रकारों और मीडिया समूहों में इतना साहस नहीं बचा है कि वह सरकार से सीधे टकरा सके। चुनौतियों का सामना करने की हिम्मत भी क्षीण हो गई है। केवल मुश्किलों से डरकर भाग रहे हैं और अपनी जिम्मेदारियों से पीछे हट रहे हैं।

उधर गाँधी जी के लिए पत्रकारिता एक मिशन के रूप में थी, पर आज इसे केवल व्यावसायिक रूप में देखा जा रहा है। उनका मिशन देश में राष्ट्रीय चेतना को जगाने के साथ-साथ लोगों के विकास के लिए था, आज की पत्रकारिता स्वार्थ सिद्धि के लिए काम कर रही है। आज पत्रकारिता मनोरंजन पर ध्यान केन्द्रित कर रही है, समाज के लिए क्या बेहतर किया जा सकता है, इस बात से बड़ी तादाद में मीडिया मतलब नहीं रख पा रहा है। गाँधी जी पत्रकारिता के माध्यम से लोगों को सामाजिक बुराइयों से अवगत कराते थे और यही नहीं बल्कि उन बुराइयों को दूर करने के लिये उन्होंने बहुत प्रयास भी किये। इन प्रयासों में उन्हें सफलता भी मिली, लोग उनके कार्यों से प्रेरित भी हुए और यही कारण था कि उनके आंदोलन को 'जन आंदोलन' कहा जाता था। आज तो पत्रकारिता में जन कल्याण की भावना नजर नहीं आती, बहुत कम पत्रकार ऐसे हैं जो ईमानदारी से अपना कार्य करते हैं, जिनके लिए जनता मायने रखती है।

कई वर्षों तक पत्रकारिता करने के बाद भी गाँधी जी ने निजी हित के लिए इसका उपयोग नही किया और न ही कभी किसी प्रकार के झूठ का समर्थन किया। गाँधी जी का मानना था कि पत्रकारिता का काम है पाठकों को साहस का पाठ सिखाना, पर आज पत्रकारिता पाठकों को भयभीत और भ्रमित कर रही है। गाँधी जी की पत्रकारिता और आज की पत्रकारिता में सबसे बड़ा अंतर यह है कि गाँधी जी के लिए पत्रकारिता जन-हित का माध्यम थी और आज के पत्रकारों के लिए व्यावसायिक हित का साधन। (प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।